साखी (कबीर)

साखियों की व्याख्या

पहली साखी

ऐसी बाँणी बोलिए, मन का आपा खोइ।
अपना तन सीतल करै, औरन कौं सुख होइ।।

भावार्थ प्रस्तुत साखी में संत कबीरदास अहंकार और कटु वचन त्यागने का संदेश देते हुए कहते हैं कि लोगों को अपने मन का अहंकार त्यागकर ऐसे मीठे वचन बोलने चाहिए, जिससे उनका अपना शरीर शीतल अर्थात् शांत और प्रसन्न हो जाए और साथ ही सुनने वालों को भी उससे सुख मिले। अत: हमें आपस में मीठे बोल बोलकर मधुर व्यवहार करना चाहिए।

दूसरी साखी

कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि।
ऐसैं घटि-घटि राँम हैं, दुनियाँ देखै नाँहिं।।

भावार्थ कबीरदास कहते हैं कि जिस प्रकार कस्तूरी नामक सुगंधित पदार्थ हिरण की अपनी नाभि में ही होता है, किंतु वह उसकी सुगंध महसूस करके उसे पाने के लिए वन-वन परेशान होकर भटकता रहता है, ठीक उसी प्रकार ईश्वर (राम) भी सृष्टि के कण-कण में तथा सभी प्राणियों के हृदय में निवास करते हैं, किंतु संसार में रहने वाले लोग अज्ञानतावश उसे देख नहीं पाते और परेशान होकर इधर-उधर ढूँढते रहते हैं। इसलिए हमें ईश्वर को बाहर न खोजकर अपने भीतर ही खोजना चाहिए।

तीसरी साखी

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि।

भावार्थ कबीरदास कहते हैं कि जिस समय मेरे अंदर 'मैं' अर्थात् अहंकार भरा हुआ था, उस समय मुझे ईश्वर नहीं मिल पा रहे थे। अब जब मुझे ईश्वर के दर्शन हो गए हैं, तो मेरे भीतर का 'मैं' अर्थात् अहंकार समाप्त हो गया है। जैसे ही मैंने उस ज्योतिस्वरूप ज्ञान रूपी दीपक को मन में देखा, तो मेरा सारा अज्ञानरूपी अंधकार समाप्त हो गया तथा मुझे इस सत्य का दर्शन हो गया है कि अहंकार ही ईश्वर का शत्रु और घोर विरोधी है।

चौथी साखी

सुखिया सब संसार है, खायै अरु सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै।।

भावार्थ कबीरदास मौज-मस्ती में डूबे रहने वाले लोगों की तुलना चिंतनशील व्यक्तियों से करते हुए कहते हैं कि इस संसार में ऐसे व्यक्ति, जो केवल खाने-पीने और सोने का कार्य करते हैं, अपने जीवन को सबसे सुखी मानकर खुश रहते हैं। कबीरदास कहते हैं कि वह दु:खी हैं, क्योंकि वह जाग रहे हैं, उन्हें संसार की नश्वरता का ज्ञान है, इसलिए वे संसार की नश्वरता को देखकर रोते हैं।

पाँचवीं साखी

बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।
राम बियोगी ना जिवै, जिवै तो बौरा होइ।।

भावार्थ कबीरदास कहते हैं कि जिन व्यक्तियों के शरीर में परमात्मा (राम) का विरह (वियोग) रूपी साँप बस जाता है, उनके बचने की कोई आशा, कोई उपाय शेष नहीं रहता। वह राम के वियोग के बिना जीवित नहीं रह पाता और यदि किसी कारण से वह जीवित रह भी जाता है, तो परमात्मा को पाने के लिए वह पागलों की भाँति ही जीवन व्यतीत करता है। परमात्मा से मिलन ही इसका एकमात्र उपाय है।

छठी साखी

निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ।
बिन साबण पाँणीं बिना, निरमल करै सुभाइ।।

भावार्थ कबीरदास कहते हैं कि जो व्यक्ति हमारी निंदा करता है, हमें उस व्यक्ति को सदा अपने पास ही रखना चाहिए। यदि संभव हो तो उसके लिए अपने घर के आँगन में ही एक कुटिया बनवाकर दे देनी चाहिए, जिससे वह हमारे करीब ही रहे। वह हमारे बुरे कार्यों की निंदा करके, बिना साबुन और पानी के ही हमारे स्वभाव को अत्यंत स्वच्छ एवं पवित्र बना देता है।

सातवीं साखी

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।
ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ।।

भावार्थ कबीरदास कहते हैं कि इस संसार में लोग धार्मिक पुस्तकें पढ़-पढ़कर मर गए, किंतु कोई भी ज्ञानी नहीं बन सका। इसके विपरीत जो मनुष्य प्रियतम यानी परमात्मा या ब्रह्म के प्रेम से संबंधित एक भी अक्षर पढ़ या जान लेता है, वह सच्चा ज्ञानी अर्थात् पंडित हो जाता है। भाव यह है कि जिसने परमात्मा को जान लिया, वही सच्चा ज्ञानी हो जाता है।

आठवीं साखी

हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि।।

भावार्थ कबीरदास कहते हैं कि मैंने विरह और ईश्वर भक्ति से जलती हुई मशाल को हाथ में लेकर अपने घर को जला लिया है अर्थात् मैंने भक्ति में भरकर अपनी सांसारिक विषय-वासनाओं को पूरी तरह से नष्ट कर दिया है। अब जो-जो भक्त मेरे साथ भक्ति के मार्ग पर जाने को तैयार हों, मैं उनका सांसारिक विषय-वासनाओं का घर भी जला डालूँगा और उनके हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम की भावना जगा दूँगा।

पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. ऐसी बाँणी बोलिए, मन का आपा खोइ।
अपना तन सीतल करैं, औरन कौ सुख होइ।।

(क) प्रस्तुत पद्यांश का शीर्षक और कवि का क्या नाम है?
(i) पद–मीरा
(ii) साखी–कबीर
(iii) मनुष्यता–मैथिलीशरण गुप्त
(iv) पर्वत प्रदेश में पावस–सुमित्रानंदन पंत

(ख) व्यक्ति पर मीठे वचनों का क्या प्रभाव पड़ता है?
(i) मन शांत और प्रसन्न हो जाता है
(ii) सुनने वालों को सुख का अनुभव होता है
(iii) (i) और (ii) दोनों
(iv) सुनाने वाले को कष्ट का अनुभव होता है

(ग) 'अपना तन सीतल करैं' पंक्ति का क्या भावार्थ है?
(i) अपने ऊपर ठंडा जल डालना
(ii) अपने मन को शांत और प्रसन्नचित्त रखना
(iii) दूसरों के कटु वचन सुनकर शांत बने रहना
(iv) कष्टों में भी मुस्कुराते रहना

(घ) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने क्या संदेश दिया है?
(i) अहंकार और कटु वचन त्यागने का
(ii) स्वयं का आत्मज्ञान करने का
(iii) ईश्वर को समझ पाने का
(iv) पुस्तकीय ज्ञान को त्यागने का

2. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि।।

(क) प्रस्तुत पद्यांश के अनुसार, कवि को ईश्वर किस स्थिति में नहीं मिल पा रहे थे?
(i) जब वह सांसारिक भव बंधनों में पड़ा था
(ii) जब उसमें अहंकार भरा हुआ था
(iii) जब उसे आध्यात्मिक ज्ञान नहीं था
(iv) जब तक उसने ईश्वर का स्मरण नहीं किया था

(ख) कवि का अज्ञान रूपी अंधकार किसके माध्यम से दूर हो गया?
(i) ईश्वर के दर्शन मात्र से
(ii) ईश्वर के स्मरण मात्र से
(iii) ज्ञानरूपी दीपक के माध्यम से
(iv) गुरु के उपदेश के माध्यम से

(ग) कवि को ईश्वर के दर्शन होने पर क्या लाभ हुआ?
(i) वह बहुत ज्ञानी हो गया
(ii) उसके भीतर का 'मैं' समाप्त हो गया

(iii) उसको अपनी शक्ति का आभास हो गया
(iv) उसे संसार व्यर्थ लगने लगा

(घ) 'दीपक' किसका प्रतीक है?
(i) उजाले का (ii) ज्ञान का
(iii) संसार का (iv) खुशियों का

3. निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ।
बिन साबण पाँणीं बिना, निरमल करै सुभाइ।।

(क) निंदा करने वाले व्यक्ति को किस स्थान पर रखना चाहिए?
(i) अपने से दूर (ii) सदा अपने पास
(iii) घर के बाहर (iv) परिवार के साथ

(ख) 'निंदक नेड़ा राखिये' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?
(i) यमक अलंकार
(ii) रूपक अलंकार
(iii) अनुप्रास अलंकार
(iv) अतिशयोक्ति अलंकार

(ग) निंदक को समीप रखने पर व्यक्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है?
(i) हमारा स्वभाव निर्मल हो जाता है
(ii) हम निंदा करना सीख जाते हैं
(iii) हम निंदक से घृणा करने लगते हैं
(iv) हम बिना कारण ही चिंतित रहने लगते हैं

(घ) निंदक हमारी निंदा करके हमें कौन-सा अवसर प्रदान करता है?
(i) दूसरों की निंदा करने का
(ii) ईर्ष्या-द्वेष करने का
(iii) आत्मसुधार करने का
(iv) आत्मग्लानि करने का

4. पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।
ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ।।

(क) पद्यांश के अनुसार, इस संसार में लोग क्या करते हुए मर गए?
(i) धार्मिक पुस्तकें पढ़-पढ़कर
(ii) अनुष्ठान करते हुए
(iii) पूजा-पाठ करते हुए
(iv) कर्मकांड करते हुए

(ख) पद्यांश के अनुसार पंडित कौन है?
(i) जो कठोर तप करता है
(ii) जिसने स्वयं की पहचान कर ली
(iii) जिसने परमात्मा का एक अक्षर भी पढ़ लिया
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ग) 'पीव' से क्या तात्पर्य है?
(i) गुरु से (ii) परमात्मा से
(iii) जीवन के दु:खों से (iv) अज्ञानता से

(घ) पद्यांश के अनुसार, सच्चा ज्ञानी कैसे बना जा सकता है?
(i) गुरु का स्मरण करने से
(ii) परमात्मा का नाम स्मरण करने से
(iii) बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़ने से
(iv) संतों का संग करने से

5. हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि।।

(क) कबीर जी का अपना घर जलाने से क्या तात्पर्य है?
(i) उन्होंने अपना घर जला दिया है, जो कि लकड़ी का बना था
(ii) उन्होंने अपनी सांसारिक विषय-वासनाओं को नष्ट कर दिया है
(iii) उन्होंने अपने ज्ञान को जलाकर नष्ट कर दिया है
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ख) 'मुराड़ा' से यहाँ क्या तात्पर्य है?
(i) जलती हुई लकड़ी से
(ii) पगड़ी बाँधने से
(iii) घर जलाने से
(iv) लकड़ी उठाने से

(ग) कबीर जी अब किसका घर जलाने की बात कर रहे हैं?
(i) अपने पड़ोसियों का
(ii) जो उनकी बात नहीं मानेगा
(iii) जो उनके साथ भक्ति मार्ग पर चलेगा
(iv) अपने गुरु का

(घ) प्रस्तुत साखी की शैली कौन-सी है?
(i) गवेषणात्मक (ii) उपदेशात्मक
(iii) अन्वेषणात्मक (iv) प्रतीकात्मक

अध्याय पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कबीर के अनुसार कौन ज्ञानी नहीं बन पाया?
(क) मोटी पुस्तकें पढ़ने वाला
(ख) दूसरों को ज्ञान देने वाला
(ग) संन्यास ग्रहण करने वाला
(घ) अपनी प्रशंसा करने वाला

2. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या सुझाव दिया है?
(क) निंदक से दूर रखने का
(ख) सज्जन की संगत में रहने का
(ग) निंदक को पास रखने का
(घ) ईश्वर भक्ति में ध्यान लगाने का

3. कबीर की साखियों के अनुसार सुखी कौन हैं?
(क) सांसारिक लोग जो सोते और खाते हैं
(ख) आध्यात्मिक लोग जो ईश्वर का नाम लेते हैं
(ग) जो स्वार्थों से ऊपर उठ गए हैं
(घ) जिसने स्वयं को नियंत्रित कर लिया

4. दीपक दिखाई देने से अँधेरा कैसे मिट जाता है?
(क) बादलों से छट जाने पर
(ख) अहंकार रूपी माया के दूर हो जाने पर
(ग) सूर्य के उदय हो जाने पर
(घ) अकारण चिंता न करने पर

5. कबीर की साखियों पर किस भाषा का प्रभाव दिखाई देता है?
(क) अवधी
(ख) राजस्थानी
(ग) भोजपुरी व पंजाबी
(घ) ये सभी

6. ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, किंतु हम उसे देख नहीं पाते, क्यों?
(क) आँखें बंद होने के कारण
(ख) मन की चंचलता के कारण
(ग) आँखों से स्पष्ट न दिखाई देने के कारण
(घ) मन में छिपे अहंकार के कारण

7. कबीर ने राम और कस्तूरी में क्या समानता बताई है?
(क) दोनों वन में रहते हैं
(ख) दोनों सुगंधित हैं
(ग) दोनों तरल पदार्थ हैं
(घ) दोनों भीतर स्थित हैं

8. 'बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागे कोइ' पंक्ति का भावार्थ क्या है?
(क) मंत्र जपने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है
(ख) विरह के समय मंत्र ही काम करते हैं
(ग) जब शरीर में किसी के बिछुड़ने का दु:ख हो तो कोई दवा या मंत्र काम नहीं करता।
(घ) विरह व्यक्ति को मंत्रों की ओर ले जाता है

9. 'कस्तूरी कुंडलि बसै ...... ' पंक्ति में कुंडलि का क्या अर्थ है?
(क) मृग (ख) नाभि
(ग) आँख (घ) पाँव

10. मन का आपा खोने से क्या अभिप्राय है?
(क) मन में अहंकार उपस्थित होना
(ख) मन में प्रभु का लीन होना
(ग) अहंकार का त्याग करना
(घ) स्वयं में खोए रहना

11. कबीर की साखी में 'जलती हुई मशाल' किसका प्रतीक है?
(क) मोह का (ख) त्याग का
(ग) ज्ञान का (घ) तपस्या का

12. 'जिवै तो बौरा होइ' पंक्ति से क्या आशय है?
(क) जीवित रहने पर सुखी नहीं रहता
(ख) जीवन नहीं के समान हो जाता है
(ग) जीवित रहता है तो पागल जैसा हो जाता है
(घ) मर जाता है

13. 'सुखिया सब संसार है .... जागै अरु रोवै' दोहे में 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं?
(क) सोना-भोग विलास का, जागना-गरीबी का
(ख) सोना-अज्ञान का, जागना-ज्ञान का
(ग) सोना-अवसर को गँवाने का, जागना-अवसर का लाभ उठाने का
(घ) सोना-सुख का, जागना-दु:ख का

14. कबीर दूसरों का घर क्यों जलाना चाहते हैं?
(क) उनको पीड़ा पहुँचाने हेतु
(ख) अपना स्वार्थ पूरा करने हेतु
(ग) उनको सन्मार्ग पर लाने हेतु
(घ) उनको मोह छोड़कर ईश्वर भक्ति में लगाने हेतु

15. पोथी पढ़ने से व्यक्ति पंडित क्यों नहीं बन सकता?
(क) क्योंकि पोथी साधारण व्यक्ति द्वारा लिखी होती है
(ख) क्योंकि पोथी ज्ञान को प्रदान करती है, परंतु हमारे आचरण को नहीं बदल सकती
(ग) क्योंकि पंडित लोगों के मानने से बनते हैं, पोथी पढ़ने से नहीं
(घ) क्योंकि पोथी हमें अच्छा मनुष्य नहीं बनाती

उत्तरमाला

पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. *क (ii), ख (iii), ग (ii), घ (i)* **2.** *क (ii), ख (iii), ग (ii), घ (ii)* **3.** *क (ii), ख (iii), ग (i), घ (iii)*
4. *क (i), ख (iii), ग (ii), घ (ii)* **5.** *क (ii), ख (i), ग (iii), घ (iv)*

अध्याय पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. *(क)* **2.** *(ग)* **3.** *(क)* **4.** *(ख)* **5.** *(घ)* **6.** *(घ)* **7.** *(घ)* **8.** *(ग)* **9.** *(ख)* **10.** *(ग)*
11. *(ग)* **12.** *(ग)* **13.** *(ख)* **14.** *(घ)* **15.** *(ख)*

व्याख्या सहित उत्तर

8. *(ग)* 'बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागे कोइ' पंक्ति से यह तात्पर्य है कि जिन व्यक्तियों के शरीर में परमात्मा का विरह रूपी साँप बस जाता है, उनके बचने की कोई आशा शेष नहीं रह जाती अर्थात् शरीर में किसी के बिछड़ने के दुःख पर कोई दवा या मंत्र काम नहीं करता।

9. *(ख)* 'कस्तूरी कुंडलि बसै ………' पंक्ति के अनुसार यहाँ 'कुंडलि' से तात्पर्य हिरण की नाभि से है। एक कस्तूरी नामक सुगंधित पदार्थ हिरण की नाभि में उपस्थित होता है। हिरण को उसकी सुगंध मदहोश कर देती है। अतः वह उसे ढूँढने के लिए जंगल में इधर-उधर भटकता रहता है।

12. *(ग)* 'जिवै तो बौरा होइ' पंक्ति से तात्पर्य यह है कि जो ईश्वर के वियोग में हो जाते हैं, उनके जीने का कोई अर्थ नहीं रह जाता अर्थात् वे ईश्वर के बिना नहीं जी सकते। यदि किसी कारण वे जीवित भी रह जाएँ तो ईश्वर को पाने के लिए वे पागलों की तरह जीवन बिताते हैं।